रसूले इस्लाम (स0) की सीरत मुदब्बिर की हैसियत से

इमादुल उलमा अल्लामा सै0 मुहम्मद रज़ी साहिब क़िब्ला मुजतहिद

सरवरे काएनात (स.) की समझदारी पर बहस करने से पहले उन हालात और उस माहौल को देखना ज़रूरी है जिसमें आपने रिसालत की तबलीग़ के काम को शुरु किया था। आपकी मुबारक ज़िन्दगी का एक हिस्सा तो वह था जिसमें आप मक्का में रहे और दूसरा हिस्सा वह था जिसमें आप मदीने में रहे।

बेअ्सत शुरु होने के बाद तक़रीबन 13 बरस तक आप मक्के में रहे थे। ज़ाहिर है कि उस वक़्त मक्के वाले और आसपास के सभी क़बीले आपके सख़्त मुख़ालिफ और दुश्मन थे और आपको हर वक़्त अपनी जान का डर रहता था सभी कुफ्फार व मुश्रिकीन आपको तकलीफ़ पहुँचाते यहाँ तक कि आपकी जान लेने पर तुले हुए थे। आपके साथ गिन्ती के कुछ लोग थे वह किसी तरह भी कुरैश और उनका साथ देने वाले क़बीलों की एकजुट ताक़त का मुक़ाबला नहीं कर सकते थे न उनके पास ज़रूरत के हिसाब से दौलत थी न फ़ौज और न हथियार ऐसे ख़तरनाक माहौल में रसूल (स.) की यह बेमिसाल समझदारी ही थी कि आपने बिना जंग किये मक्का वालों और आसपास की तमाम आबादियों तक इस्लाम की आवाज़ को पहुँचा दिया जिसके नतीजे में बड़े–बड़े नाम वाले ख़ानदानों के लोग मुसलमान हो गये और यह सिलसिला बहुत ही रुकावटों के बाद भी तेज़ी से आगे बढ़ने लगा कुरैश के काफिर आपको बहुत ज़्यादा तकलीफें देते थे मगर उनके लिये यह मुमकिन न था कि वह आप (स.) के काम को रोक सकें।

रसूल (स.) सब्र व नर्मी के साथ तमाम तकलीफें बर्दाश्त करते रहे और कभी एक पल के लिये भी आपकी मज़बूती में फर्क़ न आया। कोई दूसरा होता तो वह तकलीफों और परेशानियों से घबराकर कुछ न कुछ क़दम उठा ही लेता मगर आपने अपने दुश्मनों की किसी हरकत का जवाब न दिया और न अपने साथियों को इसकी इजाज़त दी कि वह तलवार से उनका मुक़ाबला करें क्योंकि उस वक़्त जंग करना मुसलमानों के लिये तबाही और बर्बादी को दावत देना था। बजाए इसके आपने इस पूरे ज़माने में सिर्फ समझदारी और अख़लाक़ के ज़रिये जंग लड़ी। आपके ख़यालात आपके सिपाही थे और आपका सब्र व नर्मी आपका हथियार था जिससे आपके दुश्मन बौखला गये और उन्हें अपने पैरों के नीचे से ज़मीन हिलती नज़र आने लगी और आख़िर उन्होंने तय कर लिया कि वह किसी न किसी तरकीब से आपको ख़त्म कर दें। यह वह वक़्त था जब आपकी आवाज़ दूर–दूर तक पहुँच चुकी थी और मदीने की एक बड़ी जमाअत भी इस्लाम क़बूल कर चुकी थी और 13 बरस के लम्बे ज़माने में मक्के के रहने वालों और आसपास के लोगों ने आपकी ज़िन्दगी और आपकी बातों को बहुत क़रीब से पूरी तरह देख लिया था। यही वह वक़्त था जब इस बड़े समझदार ने इसका फैसला

किया कि अब वह अपने बाप–दादा के शहर को छोड़कर मदीने की तरफ हिजरत करें। शुरु में आपके मक्के में ठहरने और वहाँ रहकर बराबर तकलीफें सहते रहने के राज़ को शायद कुछ लोग न समझे हों और इसे आपकी बेबसी और मजबूरी का नतीजा समझते हों लेकिन तारीख़ी हक़ीक़तों ने यह साबित कर दिया कि अल्लाह के रसूल (स.) का यह तरीक़ा बेबसी और लाचारी की वजह से न था बल्कि बड़ी समझदारी का नतीजा था क्योंकि एक तरफ तो मक्का के मुसलमानों की गिन्ती बहुत कम थी, उनके पास जंग का सामान न था, उनमें जंगी तन्ज़ीम न थी और उनका कोई अलग मरकज़ न था, जो दुश्मन की साज़िश से पूरी तरह महफ़ूज़ होता और सबसे बड़ी बात यह थी कि अगर किसी सूरत से भी जंग छेड़ दी जाती तो फिर आपके दुश्मनों को आपकी सीरत और किरदार के परखने और समझने का मौक़ा न मिल सकता। इस सब्र व नर्मी का असर यह हुआ कि लोगों ने बड़े सुकून के साथ आपकी बातों पर ग़ौर किया और अन्जाने तरीक़े पर आपके मज़लूम होने, आपके अच्छे अख़लाक़ की कशिश, आपके पैग़ाम की सादगी और सच्चाई उनके दिलों में और उनकी समझ व एहसास को जीतती रही और वह दुश्मनी व नफरत की उस आग की लपेट में न आ सके जो जंग छिड़ जाने के बाद आमने सामने के लोगों में भड़कने लगती है और उसकी बाहरी और अन्दरूनी आँखों को अन्धा कर दिया करती है। इस तरह 13 साल के बराबर सब्र व नर्मी, ख़यालात सीरत व किरदार का एक साथ होना, अम्न पसन्दी, अमानत, दयानत हक़ के एलान में मिसाली जुरअत व दिलेरी और आपका पूरी तरह डटे रहना और बेमिसाल साबित क़दमी ने धीरे से आपके दुश्मनों की एकता और इत्तेहाद में टाँग अड़ा दी थी और उनकी सफों में नामर्दी पैदा कर दी थी जिसका पता लोगों को उस वक़्त चला जब 8 हिजरी में मक्का की जीत के मौक़े पर सारे कुरैश ने एक आवाज़ के साथ अपने इस्लाम का एलान कर दिया था। यह बड़ी हद तक आपके उसी सब्र व नर्मी का नतीजा था जो आपने मक्का में रहकर और कुरैश का ज़ुल्म व सितम बर्दाश्त करके किया था।

अगर आप मक्का वालों से उस वक़्त जंग शुरु कर देते, या वहाँ से किसी दूसरी जगह चले जाते तो उनके दिलों पर आपकी सीरत और आपकी तालीम का वह नक़्श न बनता जो इस सूरत में हुआ और यह सब कुछ आपकी बड़ी समझदारी ही का नतीजा था।

मक्का बेशक अरबों की तहज़ीब का सबसे बड़ा मरकज़ था, वह उम्मुल कुरा कहलाता था। वहाँ हज का फरीज़ा अदा करने के लिए अरब के कोने–कोने से लोग इकटठा होते थे और इस जमा होने की वजह से इनके दिलों में जो असर पैदा होते थे उनमें और बढ़ोत्तरी पैदा हो जाती थी और उनकी तबलीग़ अरबों के एक–एक घर में अपने आप हो जाया करती थी इसलिए काफी ज़माने तक आपका वहाँ रहना बहुत असर वाला साबित हुआ और अगरचे आपको बहुत ही ज़्यादा तकलीफें उठानी पड़ीं लेकिन आपका पैग़ाम अरबों की सोंच और फिक्र पर छा गया और इस्लामी तहरीक के लिए सारे रास्ते बराबर हो गये इस तरह 13 साल तक आप (स.) मक्के में रहकर फिर मदीने में तशरीफ लाए और उसे अपना मरकज़ बना लिया। तायफ और दूसरी जगहों के मुक़ाबले में मदीने की अहमियत बहुत ज़्यादा थी इसलिए कि यह मक्का और शाम के रास्ते में था और मक्के वालों के तिजारती क़ाफले इसी रास्ते से

शाम जाया करते थे। चूँकि शाम से तिजारती ताल्लुक़ात पर मक्का वालों की माली ख़ुशहाली का बहुत कुछ दारोमदार था इसलिए अल्लाह के रसूल (स.) का मदीना को मरकज़ बना लेना उनके लिये बड़ा मसअला बन गया और उनके सामने इसका हल जंग के सिवा और कुछ न था लेकिन इस बड़े समझदार ने दुश्मन की फ़िक्र और एकजुटता की मज़बूती की बुनियादें पहले ही खोखली कर दी थीं और साथ ही मुसलमानों को अब पूरी तरह तैयार भी कर लिया था। जो आपस में भाईचारगी और इत्तेहाद व इत्तेफाक़ के बेपनाह शौक़ में डूबे हुए थे और जिसमें से हर एक रसूल (स.) के मामूली इशारे पर अपना आख़री ख़ून का क़तरा तक बहा देने के लिये तैयार रहता था।

मुसलमानों की मिसाली एकजुटता और तैयारी के साथ आपने मदीने और आसपास के यहूदी क़बीलों को भी काफ़ी ढील देकर अपने साथ ले लिया या कम से कम उनकी मुख़ालेफत के ज़ोर को तोड़ दिया। मक्का से लेकर मदीने तक इस्लाम और मुसलमानों की तारीख़ का यह शुरुआती नक़शा नबी करीम (स.) की पाक हस्ती का बनाया हुआ था जो वह्य व इल्हाम की रौशनी में आपकी बड़ी समझ का नतीजा था जिसका पहला असर यह हुआ कि 2 हिजरी में बद्र के मैदान में कुछ गिन्ती के निहत्थे मुसलमानों ने कुरैश की टिड्डी दल फौज को ठिकाने लगा दिया और इस बुरी तरह हराया जिसे तारीख़ कभी नहीं भुला सकती हालांकि इस जंग में मुसलमानों ने यहूदियों या किसी दूसरी क़ौम से किसी तरह की भी माली, फन्नी या किसी और तरह की कोई मदद नहीं ली थी बेशक रसूल (स.) बहुत बड़ी समझ वाले थे और आपकी समझदारी इन्सानी नस्ल के लिए एक अलग तरह की मिसाल है। □□□

(बक़िया.............नबी (स.) की ज़िन्दगी की झलकियाँ) आप ख़ुद भी क़ानून पर चलते थे और दूसरों को भी क़ानून तोड़ने की इजाज़त नहीं देते थे। कुर्आन गवाह है कि जिन उसूल व क़ानून पर सभी लोग चलते थे रसूल (स०) भी सख़्ती के साथ उसी क़ानून पर चलते थे।

जब बनी कुरैज़ा की जंग में मुसलमानों की जीत हुई और दुश्मनों को गिरफ्तार कर लिया गया उस वक़्त बहुत बड़ी तादाद में सोना, चाँदी और माल व दौलत मिला तो कुछ बीवियों ने इस बात की चाहत की कि अगर कुछ माल दे दें तो बेहतर होगा। रसूल (स०) ने मना कर दिया और नाराज़गी की वजह से एक महीने तक बीवियों से दूरी इख़्तियार कर ली। जिस पर सूरा 'अह्ज़ाब' की आयतें गवाह हैं।

जब आप ने मक्का को जीत लिया तो फिर किसी का डर नहीं था इसलिए आपने अबुसुफयान और इस जैसे बहुत से सरदारों के साथ भी अच्छा सुलूक किया। बहरहाल यह आप के हुकूमती अख़लाक़ के कुछ नुमाया पहलू थे कि जो जिस का हक़दार था उसके साथ वैसा ही सुलूक किया। दुश्मन की चालों के मुक़ाबले में होशियार, मोमिन के लिये झुकने वाले और अल्लाह के हुक्मों के सामने झुकने वाले, मुसलमानों के मामलों में बहुत कोशिश करने वाले थे।

ऐ ख़ुदा! हम तुझसे दुआ करते हैं कि हमको पैग़म्बर की उम्मत वाला बना दे हमें इस बड़ी मुहब्बत व उलफत के साथ दुनिया से उठा ले और क़यामत के दिन अपने नबी (स०) की ज़ियारत से हमको महरूम न करना। □□□